INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD)
© 2026 IJNRD | Volume 11, Issue 1, January 2026 | ISSN: 2456-4184 | IJNRD.ORG

"शिक्षा और समाज का द्विदिशात्मक संबंध : सामाजिक परिवर्तन, असमानता और समान अवसरों का विश्लेषणात्मक अध्ययन"

[1]श्री प्रदीप कुमार, [2]सुश्री आशा

[1]असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, सरदार महिपाल राजेन्द्र जनजातीय (पी0जी0) कॉलेज साहिया, देहरादून, उत्तराखंड, भारत

[2]असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र विभाग, सरदार महिपाल राजेन्द्र जनजातीय (पी0जी0) कॉलेज साहिया, देहरादून

सारांश

यह शोध समाज और शिक्षा के पारस्परिक संबंध का समाजशास्त्रीय एवं शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में व्यवस्थित विश्लेषण प्रस्तुत करता है। समाज एक गतिशील और संगठित सामाजिक व्यवस्था है, जिसमें व्यक्ति परस्पर अंतःक्रिया, सहयोग और सामाजिक संबंधों के माध्यम से अपने अस्तित्व, सुरक्षा तथा विकास की आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। इसी प्रकार शिक्षा समाज की एक मूलभूत सामाजिक संस्था है, जो न केवल सामाजिक संरचना, मूल्य–प्रणाली और व्यवहार प्रतिमानों को संरक्षित करती है, बल्कि सामाजिक परिवर्तन, पुनर्संरचना और प्रगति की प्रक्रिया में भी सक्रिय भूमिका निभाती है।

अध्ययन में यह स्पष्ट किया गया है कि समाज और शिक्षा का संबंध द्विदिशात्मक, परस्पर निर्भर तथा गतिशील है। एक ओर समाज शिक्षा के स्वरूप, उद्देश्यों, पाठ्यक्रम और पहुँच को निर्धारित करता है, वहीं दूसरी ओर शिक्षा समाज को सशक्त, जागरूक और प्रगतिशील बनाने का कार्य करती है। शिक्षा समाजीकरण का प्रमुख माध्यम है, जिसके माध्यम से व्यक्ति के व्यवहार का निर्माण कर सामाजिक मूल्य, मानदंड, भूमिकाएँ और उत्तरदायित्वों को व्यवहार में संरचित किया जाता है तथा एक जिम्मेदार नागरिक के रूप मे व्यक्ति का विकस होता है।

शोध में औपचारिक, अनौपचारिक एवं गैर–औपचारिक शिक्षा की भूमिका, सामाजिक परिवर्तन एवं सामाजिक गतिशीलता में शिक्षा का योगदान, तथा शिक्षा के माध्यम से समान अवसर, सामाजिक न्याय, मानवाधिकार और लोकतांत्रिक मूल्यों के विकास पर विशेष बल दिया गया है। साथ ही यह भी विश्लेषित किया गया है कि किस प्रकार सामाजिक संरचना, आर्थिक असमानता, जाति, वर्ग, लिंग और सांस्कृतिक विविधता शिक्षा की समानता और पहुँच को प्रभावित करती हैं तथा कई बार शिक्षा सामाजिक असमानताओं को कम करने के बजाय पुनः उत्पन्न भी कर देती है।

शब्द कुंजी : रूपात्मक समाज, मिनी–सोसाइटी, रिफ्लेक्सिविटी, सामाजिक प्रजनन, मानवाधिकार शिक्षा, सांस्कृतिक पूंजी

प्रस्तावना

समाज और शिक्षा के मध्य संबंध समाजशास्त्र तथा शिक्षाशास्त्र का एक केन्द्रीय और बहुआयामी विषय है। समाज मनुष्यों का ऐसा संगठित समूह है जो परस्पर अंतःक्रिया, सहयोग और सामाजिक संबंधों के माध्यम से अपने अस्तित्व, सुरक्षा और विकास की आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। व्यक्ति अकेले जीवन की समस्त आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर सकता, इसलिए वह समाज के भीतर रहकर सामाजिक जीवन का निर्माण करता है। इस सामूहिक जीवन–व्यवस्था को ही समाज कहा जाता है। विभिन्न समाजशास्त्रियों ने समाज को सामाजिक संबंधों के जाल, अंतःक्रियाओं की प्रणाली, सहयोग, संघर्ष और अभिनय पर आधारित संगठित संरचना के रूप में परिभाषित किया है। स्पष्ट है कि समाज एक स्थिर इकाई नहीं, बल्कि समय के साथ निरंतर विकसित होने वाली गतिशील व्यवस्था है।

इसी प्रकार शिक्षा भी समाज की एक मूलभूत और महत्वपूर्ण सामाजिक संस्था है। शिक्षा न केवल समाज की संरचना, मूल्य–व्यवस्था और व्यवहार प्रतिमानों को बनाए रखने का कार्य करती है, बल्कि सामाजिक परिवर्तन, पुनर्संरचना और प्रगति की प्रक्रिया में भी सक्रिय भूमिका निभाती है। प्रत्येक समाज अपनी सांस्कृतिक, विशेषताओं, परंपराओं, मूल्यों और आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षा की व्यवस्था करता है। अनौपचारिक शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति परिवार, पडोस, मित्र समूह और समाज से जीवन मूल्यों, रीति–रिवाजों और सामाजिक व्यवहारों को सीखता है, जबकि औपचारिक और गैर–औपचारिक शिक्षा संस्थागत ढांचे के अंतर्गत ज्ञान, कौशल और सामाजिक चेतना का विकास करती है।

चूँकि शिक्षा समाज की एक इकाई है तथा समाज ही तय करता है कि शैक्षिक व्यवस्था क्या होगी, जिसके परिणामस्वरूप व्यक्ति व समाज का विकास होता है। इसके विपरीत शिक्षा भी सामाजिक संरचना को परिवर्तित करने का कार्य करती है। अतः शिक्षा व समाज के बीच संबंध द्विदिशात्मक, परस्पर निर्भर और गतिशील है। एक ओर समाज शिक्षा के स्वरूप, उद्देश्यों, पाठ्यक्रम और पहुँच को निर्धारित करता है, तो दूसरी ओर शिक्षा समाज को सशक्त, जागरूक और प्रगतिशील बनाने का कार्य करती है। शिक्षा समाजीकरण का प्रमुख माध्यम है,

जिसके द्वारा व्यक्ति सामाजिक मानदंडों, मूल्यों, भूमिकाओं और उत्तरदायित्वों को आत्मसात करता है तथा एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में विकसित होता है। साथ ही, शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का भी एक सशक्त साधन है, जो वैज्ञानिक दृष्टिकोण, आलोचनात्मक चेतना, समानता, लोकतंत्र और सामाजिक न्याय को प्रोत्साहित करती है तथा असमानता, रूढ़िवादिता, भेदभाव और सामाजिक कुरीतियों जैसी सामाजिक धारणाओं को कम करने में सहायक है।

वर्तमान समय में शिक्षा को सार्वभौमिक अधिकार माना गया है, फिर भी सामाजिक संरचना, आर्थिक असमानता, जाति, वर्ग, लिंग और सांस्कृतिक विविधता जैसे कारक शिक्षा की समानता और पहुँच को गहराई से प्रभावित करते हैं। वर्तमान समय में शिक्षा, संसाधनों तक पहुँच, समाज में सम्मान व प्रास्थिति प्राप्त करने के प्रमुख माध्यम के रूप में कार्य करती है जिसके परिणामस्वरूप कई बार शिक्षा सामाजिक असमानताओं को कम करने के बजाय उन्हें पुनः नये स्वरूप में उत्पन्न भी करती है।

समाज

मैकाइवर एवं पेज ने समाज को "सामाजिक संबंधों के जाल या ताने–बाने" के रूप में परिभाषित किया है। उनके अनुसार समाज केवल व्यक्तियों का समूह नहीं है, बल्कि उन व्यक्तियों के बीच स्थापित विविध सामाजिक संबंधों की एक संगठित संरचना है, जो समाज को जीवंत बनाए रखती है।

फेयरचाइल्ड के अनुसार समाज व्यक्तियों का ऐसा समूह है जो अपने प्रमुख हितों की पूर्ति के लिए परस्पर सहयोग करता है। इन हितों में अनिवार्य रूप से जीवन की रक्षा, भरण–पोषण तथा अपने अस्तित्व को स्थायित्व प्रदान करना शामिल है। व्यक्ति अपने व्यक्तिगत और सामूहिक हितों की पूर्ति के लिए सामाजिक सहयोग पर निर्भर रहता है।

जार्ज सिमेल ने समाज को उन व्याक्तियों का समूह माना है जो अन्तः क्रिया द्वारा सम्बन्धित हैं।

समाज सामान्यतः व्यक्तियों के ऐसे समूह को कहा जाता है जो आपसी अंतःक्रिया के माध्यम से एक–दूसरे से जुड़े होते हैं। चूँकि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है जिसके परिणामस्वरूप वह जन्म से ही समाज का हिस्सा होता है। अतः व्यक्ति अकेले समाज में रहकर अपने अस्तित्व, सुरक्षा और विकास की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर सकता, इसलिए वह अन्य व्यक्तियों के साथ मिलकर सामाजिक जीवन का निर्माण करता है। इसी सामूहिक जीवन व्यवस्था को समाज कहा जाता है।

समाज व्यक्ति के दीर्घकालीन विकास की प्रक्रिया और मनुष्य की पारस्परिक गतिविधियों के परिणामस्वरूप निर्मित एक इकाई है। समाज का प्रारंभिक निर्माण व्यक्ति द्वारा अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के उद्देश्य से किया गया था, लेकिन समय के साथ यह एक जटिल और संगठित प्रणाली के रूप में विकसित हुआ।

समय और सामाजिक विकास की प्रक्रिया के दौरान व्यक्ति द्वारा निर्मित विभिन्न सामाजिक इकाइयों– जैसे परिवार, समुदाय, समूह और संस्थाएँ– के बीच होने वाली अंतःक्रियाओं से अनेक अन्य सामाजिक उप व्यवस्थाओं का जन्म हुआ। इन उप व्यवस्थाओं ने सामाजिक परिवर्तन, गतिशीलता, सामाजिक संबंध, समाजीकरण तथा असमानता जैसे महत्वपूर्ण सामाजिक कारकों और प्रक्रियाओं को आकार दिया।

इस प्रकार समाज एक गतिशील, निरंतर विकसित होने वाली सामाजिक संरचना है, जिसमें व्यक्ति और समाज एक–दूसरे को प्रभावित करते हुए सामाजिक जीवन को निरंतर आगे बढ़ाते हैं।

शिक्षा

दुर्खीम के अनुसार "शिक्षा अधिक आयु के लोगों द्वारा उन लोगों के प्रति की जाने वाली क्रिया है, जो अभी सामाजिक जीवन में प्रवेश करने योग्य नहीं हैं। इसका उद्देश्य शिशु में उन भौतिक, बौद्धिक एवं नैतिक विशेषताओं का विकास करना है, जो उसे समाज और पर्यावरण के साथ अनुकूलन करने में सहायक हों।"

फिलिप्स के अनुसार "शिक्षा वह संस्था है, जिसका केंद्रीय तत्व ज्ञान का संग्रह और उसका संप्रेषण है।"

पेस्टालॉजी के अनुसार "शिक्षा मनुष्य की समस्त सहज शक्तियों का स्वाभाविक, सामंजस्यपूर्ण एवं प्रगतिशील विकास है।"

शिक्षा एक मूलभूत सामाजिक संस्था है जो न केवल समाज की संरचना, मूल्य–व्यवस्था और व्यवहार प्रतिमानों को नियंत्रित करती है, बल्कि सामाजिक परिवर्तन और पुनर्संरचना की प्रक्रिया में भी सक्रिय भूमिका निभाती है। प्रत्येक समाज, संस्कृति और समुदाय अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक विशेषताओं के अनुरूप कुछ व्यवहारों, मूल्यों और मान्यताओं को जन्म से ही परिवार और समाज के माध्यम से विकसित करता है, जो मुख्यतः अनौपचारिक शिक्षा का हिस्सा होते हैं, जबकि औपचारिक और गैर–औपचारिक शिक्षा समाज द्वारा स्थापित संस्थागत व्यवस्थाओं के अंतर्गत संचालित होती है। आधुनिक समय में औपचारिक शिक्षा ने सार्वभौमिक अधिकार का स्वरूप ग्रहण किया है, किंतु इसके बावजूद शिक्षा तक समान पहुँच और समान अवसर अभी भी सामाजिक संरचना, स्तरीकरण, शक्ति के केंद्रीकरण, आर्थिक असमानताओं, सांस्कृतिक विविधता और अनौपचारिक सामाजीकरण प्रक्रियाओं से गहराई से प्रभावित रहते हैं। इस प्रकार शिक्षा जहाँ एक

ओर समाज को नियंत्रित और परिवर्तित करने का माध्यम है, वहीं दूसरी ओर वह स्वयं भी समाज की ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और संरचनात्मक परिस्थितियों से नियंत्रित और परिवर्तित होती है।

वर्तमान समय में शिक्षा की प्रासंगिकता

बाजार–केंद्रित से मानव–केंद्रित दृष्टिकोण

आधुनिक शिक्षा को लंबे समय तक केवल रोजगार और आर्थिक उत्पादकता से जोड़कर देखा गया है, जहाँ विद्यालयों का मुख्य लक्ष्य छात्रों को श्रम–बाज़ार के लिए तैयार करना रहा है। किंतु यह दृष्टिकोण शिक्षा की व्यापक सामाजिक भूमिका को सीमित कर देता है। शिक्षा का उद्देश्य केवल नौकरी–योग्यता विकसित करना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों को यह समझाने में भी सहायता करना है कि वे विविध, बहुसांस्कृतिक और लोकतांत्रिक समाजों में किस प्रकार शांतिपूर्वक सह–अस्तित्व स्थापित कर सकते हैं। जब शिक्षा अत्यधिक बाजार–संचालित हो जाती है, तब वह मानवीय मूल्यों, सामाजिक न्याय और नैतिक उत्तरदायित्व की उपेक्षा करने लगती है। इसलिए शिक्षा को मानव–केंद्रित दृष्टिकोण की ओर स्थानांतरित करना आवश्यक है, जिसमें आर्थिक दक्षता के साथ–साथ सामाजिक संवेदनशीलता और नैतिकता का विकास भी हो।

विद्यालय एक "मिनी–सोसाइटी" के रूप में

विद्यालयों को एक प्रकार की "मिनी–सोसाइटी" के रूप में देखा जा सकता है, जहाँ विद्यार्थी न केवल शैक्षणिक ज्ञान अर्जित करते हैं, बल्कि सामाजिक जीवन के नियमों, मूल्यों और व्यवहारों को भी सीखते हैं। विद्यालय वह स्थान है जहाँ विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक पृष्ठभूमियों के बच्चे प्रतिदिन एक–दूसरे से अन्तःक्रिया करते हैं। इस प्रक्रिया के माध्यम से वे भिन्नताओं का सम्मान करना, सहयोग करना और सामूहिक जीवन में सहभागिता निभाना सीखते हैं। इस दृष्टि से विद्यालय सामाजिक प्रशिक्षण और नागरिक निर्माण के महत्वपूर्ण केंद्र हैं, जो समाज व भविष्य को आकार देने में निर्णायक भूमिका निभाते हैं।

रूपात्मक समाज और शिक्षा की अनुकूलनशीलता

वर्तमान समाज को एक रूपात्मक समाज के रूप में समझा जा सकता है, जो निरंतर परिवर्तनशील है और स्वयं का निर्माण नए सिरे से करता रहता है। वैश्वीकरण, तकनीकी प्रगति और सांस्कृतिक अन्तःक्रिया निरंतर सामाजिक संस्थाओं, मानदंडों और पहचान को बदलने का काम कर रही है। ऐसे परिवेश में शिक्षा का दायित्व है कि वह पारंपरिक और स्थिर शिक्षण–पद्धतियों से आगे बढ़े तथा विद्यार्थियों को परिवर्तनशील परिस्थितियों के अनुरूप सोचने और कार्य करने के लिए तैयार करे। शिक्षा तभी प्रभावी हो सकती है जब वह समाज की इस गतिशील प्रकृति को समझते हुए स्वयं को निरंतर अनुकूलित करे।

रिफ्लेक्सिविटी और आलोचनात्मक चेतना का विकास

तेजी से बदलती दुनिया में केवल ज्ञान का संचय पर्याप्त नहीं है; इसके साथ–साथ विद्यार्थियों में रिफ्लेक्सिविटी अर्थात् स्वयं और समाज के बारे में गंभीर तथा आलोचनात्मक रूप से सोचने की क्षमता का विकास भी आवश्यक है। रिफ्लेक्सिव शिक्षा विद्यार्थियों को सामाजिक परिवर्तनों को समझने, उनके प्रभावों का विश्लेषण करने और उनके प्रति उत्तरदायी दृष्टिकोण विकसित करने में सहायता करती है। यह क्षमता उन्हें न केवल व्यक्तिगत जीवन में, बल्कि सामाजिक और नागरिक जीवन में भी अधिक सजग और सक्रिय बनाती है।

मानवाधिकार शिक्षा : शैक्षिक ढाँचे का केंद्र

मानवाधिकारों को शिक्षा के केंद्रीय ढाँचे के रूप में स्थापित करना समकालीन बहुसांस्कृतिक समाजों की एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है। मानवाधिकार शिक्षा का आशय केवल कानूनों और अधिकारों की जानकारी देना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों में सम्मान, गरिमा, समानता और न्याय जैसे मूलभूत मूल्यों को विकसित करना भी है। यह शिक्षा छात्रों को यह सिखाती है कि विविधताओं के बावजूद साझा मानवीय मूल्यों के आधार पर सहयोग और सह–अस्तित्व कैसे संभव है। अतः मानवाधिकार शिक्षा सामाजिक समरसता और लोकतांत्रिक संस्कृति के निर्माण में सहायक है।

शिक्षा और समाज का द्वि–दिशात्मक संबंध

शिक्षा और समाज के बीच संबंध अत्यंत घनिष्ठ और द्वि–दिशात्मक है। समाज यह निर्धारित करता है कि विद्यालयों में कौन–से ज्ञान, मूल्य और कौशल महत्वपूर्ण माने जाएँगे, जबकि विद्यालय समाज की सांस्कृतिक, सामाजिक और आर्थिक संरचना को बनाए रखने या उसमें परिवर्तन लाने की क्षमता रखते हैं। परिवार, धर्म, राजनीति, अर्थव्यवस्था और तकनीक ये सभी कारक शिक्षा को प्रभावित करते हैं और शिक्षा बदले में सामाजिक जीवन की दिशा तय करती है। इसीलिए शिक्षा को समाज से अलग करके नहीं समझा जा सकता।

सामाजिक प्रजनन, असमानता और शिक्षा

यद्यपि शिक्षा को सामाजिक समानता का माध्यम माना जाता है, परंतु व्यवहार में यह अनेक बार सामाजिक असमानताओं को पुनः उत्पन्न करती है। सामाजिक वर्ग, आर्थिक संसाधन और सांस्कृतिक पूंजी शिक्षा के माध्यम से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक स्थानांतरित होती रहती है। उच्च आय वर्ग के परिवार निजी पूरक शिक्षा के माध्यम से अपने बच्चों को अतिरिक्त लाभ प्रदान कर सकते हैं, जबकि निम्न

आय वर्ग के परिवार ऐसी सुविधाओं से वंचित रहते हैं। इससे समतावादी सार्वजनिक शिक्षा नीतियों का प्रभाव कमजोर पड़ जाता है और सामाजिक गतिशीलता सीमित हो जाती है।

वैश्वीकरण, विविधता और विद्यालयों की भूमिका

वैश्वीकरण ने समाजों को अधिक विविध और परस्पर–जुड़ा हुआ बना दिया है, लेकिन इसके साथ–साथ नस्लवाद, ज़ेनोफोबिया और सामाजिक बहिष्करण जैसी चुनौतियाँ भी उत्पन्न हुई हैं। विद्यालय उन कुछ सार्वजनिक स्थलों में से हैं जहाँ विभिन्न पृष्ठभूमियों के बच्चे प्रतिदिन एक–दूसरे के संपर्क में आते हैं। इसलिए विद्यालयों की भूमिका केवल शैक्षणिक नहीं, बल्कि सामाजिक सह–अस्तित्व, सहिष्णुता और लोकतांत्रिक मूल्यों को विकसित करने की भी है। पाठ्यक्रम और शिक्षण–प्रक्रिया में विविध दृष्टिकोणों को शामिल करना इस दिशा में एक आवश्यक कदम है।

शिक्षा, महिला सशक्तिकरण और सामाजिक परिवर्तन

शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का एक सशक्त माध्यम है, विशेषकर महिलाओं के संदर्भ में। महिला शिक्षा से स्वास्थ्य में सुधार, कम उम्र में विवाह और प्रजनन दर में कमी, घरेलू हिंसा में गिरावट और आर्थिक भागीदारी में वृद्धि देखी जाती है। इस प्रकार शिक्षा न केवल व्यक्तिगत उन्नति का साधन है, बल्कि व्यापक सामाजिक और आर्थिक विकास का भी आधार है।

निष्कर्ष

इस अध्ययन के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि समाज और शिक्षा के बीच संबंध अत्यंत घनिष्ठ, परस्पर तथा द्विदिशात्मक है। शिक्षा केवल ज्ञान के संप्रेषण की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह एक सशक्त सामाजिक संस्था है जो समाज की संरचना, मूल्य–व्यवस्था, व्यवहार प्रतिमानों और सामाजिक संबंधों को प्रभावित करती है। वहीं दूसरी ओर समाज की सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं ऐतिहासिक परिस्थितियाँ शिक्षा के स्वरूप, उद्देश्यों, पाठ्यक्रम, संस्थागत ढांचे और उसकी पहुँच को निर्धारित करती हैं।

शिक्षा समाजीकरण का प्रमुख माध्यम है, जिसके द्वारा व्यक्ति सामाजिक मूल्यों, मान्यताओं, परंपराओं और उत्तरदायित्वों को आत्मसात करता है। साथ ही शिक्षा सामाजिक परिवर्तन और सामाजिक गतिशीलता का एक प्रभावी साधन भी है, जो वैज्ञानिक दृष्टिकोण, आलोचनात्मक चेतना, समानता, लोकतांत्रिक मूल्यों और सामाजिक न्याय को प्रोत्साहित करती है।

हालाँकि, यह भी स्पष्ट है कि शिक्षा स्वयं सामाजिक विषमताओं से अछूती नहीं है। आर्थिक असमानता, सामाजिक स्तरीकरण, जाति, वर्ग, लिंग तथा सांस्कृतिक पूंजी जैसे कारक शिक्षा की समान पहुँच और गुणवत्ता को प्रभावित करते हैं, जिसके परिणामस्वरूप कई बार शिक्षा सामाजिक असमानताओं को कम करने के बजाय उन्हें पुनः उत्पन्न भी करती है। वैश्वीकरण और बाजार–केन्द्रित दृष्टिकोण ने शिक्षा के मानवीय और सामाजिक उद्देश्यों के समक्ष नई चुनौतियाँ प्रस्तुत की हैं।

अतः निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि शिक्षा और समाज को एक–दूसरे से अलग करके नहीं समझा जा सकता। एक ओर जहाँ समाज शिक्षा को दिशा देता है, वहीं शिक्षा समाज को सशक्त, जागरूक और प्रगतिशील बनाने की क्षमता रखती है। समकालीन परिवर्तनीय समाज में शिक्षा की प्रभावशीलता तभी सुनिश्चित की जा सकती है जब वह मानव–केन्द्रित, समावेशी, न्यायपूर्ण और सामाजिक रूप से संवेदनशील दृष्टिकोण पर आधारित हो। इसी के माध्यम से एक समतामूलक, लोकतांत्रिक और मानवीय समाज के निर्माण की परिकल्पना साकार की जा सकती है।

संदर्भ

- Gupta, M. L., & Sharma, D. D. (2015). Samajshastra. Agra, India: Sahitya Bhawan Publications.
- Cremer, H., De Donder, P., & Pestieau, P. (2009). Education and social mobility (CORE Discussion Paper No. 2009/23). Université catholique de Louvain.
- Doreswamy, G. B. (2019). Relationship between society and education. International Journal of Humanities & Social Science Studies, 5(3), 71–78.
- Engel, L., Maxwell, C., Yemini, M., & Koh, A. (2021). Education and social mobility: Possibilities, reproductive structures, discourse and materiality. International Studies in Sociology of Education, 30(4), 359–361.
- George, B., Mirza, S., Nagar, P., Meena, I., Sharma, R., & Ansari, M. (2023). Influence of society, culture and modernity on education. In Education: Meaning, nature and philosophy (pp. 23–27). Career Point Publications.
- Gupta, P. (2016). Education disparities and social mobility in India: Examining the intersection of education gaps and social ascent. International Journal of Research and Analytical Reviews (IJRAR), 3(4).
- Haveman, R., & Smeeding, T. (2006). The role of higher education in social mobility. The Future of Children, 16(2), 125–150.
- Hoque, M. (2023). Impact of education in fostering social mobility. International Journal of Emerging Knowledge Studies, 2(2), 44–47.
- K. M., M. (2013). The role of education in social mobility: A comparative analysis. Review of Research, 2(10).

- Nazimuddin, S. K. (2015). Social mobility and role of education in promoting social mobility. International Journal of Scientific Engineering and Research, 3(7), 176–179.
- Naskar, S. K. (n.d.). Education and social mobility [Lecture notes]. Dr. Kanailal Bhattacharyya College.
- Neelsen, J. P. (1975). Education and social mobility. Comparative Education Review, 19(1), 129–143.
- Prasad, C., & Gupta, P. (2020). Educational impact on the society. International Journal of Novel Research in Education and Learning, 7(6), 1–7.
- Sheikh, S. A., & Saxena, S. (2019). Education and social mobility among women. Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (JETIR), 6(1).
- Singh, S. P. (2023). Role of education in social changes: A study with special reference to women empowerment and health. International Journal of Creative Research Thoughts (IJCRT), 11(5), 8–17.
- Soni, H. H. (2023). Education and social mobility in India: A sociological inquiry. International Journal of Social Impact, 8(1), 173–185.
- Thakar, K. R. (2015). Understanding society's influence on education. International Journal for Research in Education, 4(6), 1–7.
- Tracchi, M. (2019). Revisiting the role of education in global society: Relevance of the concept of "value generalization" in an educational context. Societies Without Borders, 13(1), Article 7.
- Upadhyay, Y., & Sahu, A. (2019). Education and social mobility: A critical review. International Journal of Early Childhood Special Education, 11(2), 536–541.
- Yuliani, S., & Hartanto, D. (2017). Perceptions of education role in developing society: A case study at Riau, Indonesia. Journal of Education and Learning, 6(1), 143–151.

- **Copyright & License:**

- © Authors retain the copyright of this article. This work is published under the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0), permitting unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.